हमने धर्म मान लिया, यह हमारी भूल है, गलती है। लेकिन अन्य समाजों के लिए यह स्वाभाविक है।

सम्प्रदाय की भी बहुत बड़ी शक्ति है। सम्प्रदाय का अर्थ ही होता है कि उसका कोई एक मार्गदर्शक है। उसका एक विचारों का संग्रह है, उसके ही मार्गदर्शक के रूप में जाना जाने वाला कोई एक ग्रन्थ है। ग्रन्थ द्वारा दी गयी पूजा करने की विशेष पद्धति और कर्मकाण्ड है। अगर हिन्दू को एक सम्प्रदाय मानेंगे तो इसका रचयिता कौन है? कौन सा धर्मग्रन्थ हिन्दुओं का माना जाता है? कोई गीता को मानता है, कोई उपनिषद को मानता है, कोई वेदों की पूजा करता है, कोई भागवत को मानता है। हिंदू एक सम्प्रदाय होता तो उसका एक ग्रन्थ होता, एक पूजा-पद्धति होती, एक ही प्रकार के कर्मकांड होते। भारत में पूजा पद्धति में कई प्रकार की भिन्नताएं हैं। और इतनी सारी भिन्नताओं के बावजूद यहां पर तो यह माना गया है कि जो मानस पूजा करता है वह सबसे श्रेष्ठ है।

हमारे यहां धमार्थ चिकित्सालय या यात्रियों की सुविधा के लिए धर्मशालाएं बनायी जाती हैं। लेकिन वहां कोई पूजा, पाठ तो नहीं होता। वहां यह कभी नहीं कहा जाता कि भगवान के सामने फूल चढ़ाओगे तभी चिकित्सा होगी या ठहरने को कमरा मिलेगा। सारे अधिकारों को छोड़कर समाज के लिए जो भवन बनता है, उसको धर्मशाला कहते हैं। धर्मदायी चिकित्सालय वही होता है जहां लाभ का विचार न करते हुए केवल सेवा करने और चिकित्सा करने की व्यवस्था होती है। यह पाश्चात्य संकल्पना 'चैरिटी' से भिन्न है। राजस्थान में सेठ लोगों ने आम जनता के लिए कुएं, बावड़ी बनवाए। लेकिन वहां कोई पूजा-पाठ तो करवाते नहीं। तो क्या वह धार्मिक कार्य नहीं हुआ? दुर्भाग्य से, धर्म की व्याख्या बदल गयी। समस्या यह है कि इस काल में विदेशी अथवा दूसरी विचारधाराओं के लोग इन बारीकियों को नहीं समझ पाएंगे, क्योकि वहां ऐसी संकल्पनाएं ही नहीं हैं। वहां चैरिटी शब्द चलता है, पर वह धर्म नहीं हो सकता। वह धर्म शब्द का नियरली करेक्ट (Nearly Correct) अनुवाद हो सकता है, पर करेक्ट नहीं। यह बात समझने की आवश्यकता है।

उसी प्रकार राष्ट्र और इसके सन्दर्भ में भी कई प्रकार की बातें हैं। यूनाइटेड नेशन्स आर्गनाइजेशन अर्थात यूएनओ दुनियाभर के देशों का शीर्ष संगठन है। लेकिन वह राष्ट्रों का संगठन नहीं। वहां पर जिस प्रकार की चर्चा